AS - 2711

B.A. (Hon's) (Third Semester) Examination, 2013

HISTORY.

Paper - BH 3.1

(History of India during the Rule of Delhi Sultnate : 1206-1414)

Section 'A' खण्ड 'अ'

(1) (i) अमीर खुसरो (ii) 1206 ई. (iii) इल्तुतमिश (iv) याकूत (x)
(v) जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (vi) गैर मुस्लिमों से
(vii) फिरोजशाह तुगलक (viii) अलाउद्दीन खिलजी
(ix) फिरोजशाह तुगलक (x) शहना ए मंडी

खण्ड 'ब' Section 'B'

उत्तर - 2 - भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा मध्य एशिया से जुड़ी हुई एवं असुरक्षित थी। प्राचीन काल में यूनानी, शक, कुषाण, हूण - आक्रमणकारियों ने इस मार्ग से भारत में प्रवेश किया। तुर्क भी इसी मार्ग से भारत आए। यद्यपि तुर्कों ने सीमांत की सुरक्षा की तरफ ध्यान दिया तथापि सुरक्षात्मक व्यवस्था समुचित नहीं थी। अतः संपूर्ण सल्तनत काल में इस मार्ग द्वारा भारत पर मंगोलों का आक्रमण हुआ। मंगोलों का उदय, उद्देश्य, एवं प्रकृति - चीन की खानाबदोश जाति, मध्य एशिया के अधिकांश भाग पर अधिकार, बर्बर, क्रूर जाति, परन्तु उद्यमी, वीर योद्धा भारत पर आक्रमण का उद्देश्य लूटपाट करना।

मामलुक सुल्तानों की नीति - कुतुबुद्दीन ऐबक को मंगोल आक्रमणकारियों का सामना नहीं करना पड़ा। इल्तुतमिश के समय में मंगोल आक्रमण के भय से ख्वारिज्म का शाह भारत की तरफ शरण लेने आया और मंगोलों के विरुद्ध सहायता मांगी लेकिन इल्तुतमिश ने मंगोलों से शत्रुता मोल नहीं ली। और चंगेज खां जैसे मंगोल आक्रमणकारी से सल्तनत को बचाया। रजिया और अन्य सुल्तान - रजिया ने मंगोलों के शत्रुओं को सहायता नहीं की, बहराम शाह के समय ताहिर ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। अलाउद्दीन मसूदशाह और नासिरुद्दीन महमूदशाह (1246-66) को भी मंगोल आक्रमण का

सामना करना पड़ा। 1245-46 में मंगोल नेता मंगू खाँ ने उच्छ पर आक्रमण किया और वह पंजाब में व्यास नदी तक बढ़ गया था। बलबन ने मंगोलों पर नियंत्रण रखा। मंगोल नेता हलाकू से मैत्रीपूर्ण संबंध भी स्थापित किया। बलबन ने सुल्तान बनने के बाद पुराने दुर्गों की मरम्मत कराई, नए दुर्ग बनवाये, सैनिक छावनियाँ बनवाई। सीमांत प्रदेश की रक्षा का भार शेर खाँ को सौंपा। बलबन ने मंगोल आक्रमण रोकने के प्रयास किये। के खुसरो ने लाहौर को मंगोलों से मुक्त कराया पर रावी नदी के पश्चिम के क्षेत्रों पर मंगोलों का अधिकार बना रहा। अंतिम ~~शासक~~ मामलुक सुल्तान के बाद के समय भी मंगोल सीमावर्ती प्रदेशों में उत्पात मचाते रहे।

खिलजियों और मंगोलों के संबंध - 13वीं सदी के उत्तरार्द्ध से मंगोल भारत विजय का स्वप्न देखने लगे। खिलजी शासन में अनेक बार मंगोल आक्रमण हुए। मंगोल नेता हलाकू के पोते अब्दुल्ला को फिरोज से समझौता करना पड़ा। कुछ मंगोलों ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया और वे नव मुस्लिम कहलाये। मंगोलों को दिल्ली में बसने की अनुमति देना भी एक राजनीतिक भूल थी। आगे चलकर मंगोल राज्य की राजनीति में हस्तक्षेप करने लगे।

<u>अलाउद्दीन और मंगोल</u> - फिरोज की मृत्यु के बाद मंगोल पुनः उत्पात मचाने लगे। नुसरत खाँ और जफर खाँ को सीमा की सुरक्षा का भार सौंपा गया। फिर भी अलाउद्दीन के समय में मंगोलों ने अनेक बार आक्रमण किया। अलाउद्दीन ने क्रूरता पूर्वक मंगोलों का दमन किया फलतः मंगोलों में आतंक फैल गया उसके बाद उन्होंने पुनः भारत पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया। फिर तैमूर के आक्रमण ने तुगलक वंश का पतन कर दिया।

परिणाम - 1. मंगोलों के भय से सुल्तानों को दिल्ली में ही रहना पड़ता था।

2. केन्द्रीय शक्ति कमजोर पड़ने लगी।
3. ~~कई~~ स्थानीय शासक स्वतंत्र होने लगे।
4. अनेक मंगोल भारत में बस गए और उन्होंने सल्तनत की राजनीति में भाग लिया
5. भारत की आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था प्रभावित हुई।
6. सुल्तानों की विस्तारवादी नीति में बाधा पड़ी।
7. मंगोलों से संघर्ष में सल्तनत की सेना नष्ट हुई।
8. कमजोर सेना साम्राज्य के पतन का कारण बनी।

P.T.O.

(3) इल्तुतमिश का राज्यारोहण, इल्तुतमिश की समस्याएं दर्शाते हुए भूमिका इल्तुतमिश के राजनीतिक कार्य — (1) अपने प्रतिद्वंद्वियों का दमन - यल्दूज कुबाचा का पतन, (2) मंगोल आक्रमण का खतरा, मंगोलों से संबंध (3) सैनिक अभियान - बिहार - बंगाल पर विजय, राजपूतों राज्यों से संबंध दोआब की विजय, सीमांत प्रदेश की सुरक्षा, खलीफा से स्वीकृति पत्र प्राप्त होना, प्रशासनिक व्यवस्था, सल्तनत की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि (चालीसा का अंत), इक्तादारी व्यवस्था की स्थापना, सैनिक एवं न्यायिक सुधार, मुद्रा में सुधार, एवं अंत में कार्यों की समीक्षा करना है।

उत्तर - (4) भूमिका (1) दैवी अधिकार के सिद्धान्त का समर्थन, शाहीवंशज होने पर बल, व्यक्तिगत जीवन में आवश्यक परिवर्तन, निम्नकुल के लोगों से घृणा राजदरबार को सुसज्जित तथा अनुशासित बनाना।
(2) विद्रोहियों का दमन — (i) दिल्ली तथा दोआब के डाकुओं का दमन (ii) कटेहर के हिन्दू विद्रोहियों का दमन (iii) बंगाल में तुगरिल खां के विद्रोह का दमन (iv) मंगोलों के हमलों से राज्य को सुरक्षित करने के लिए बलबन की सीमान्त नीति
(4) सुल्तान के प्रशासनिक कदम (i) केन्द्रीय शासन को दृढ़ करना.
(ii) तुर्क सरदारों या चालीस गुलामों का दमन
(5) सेना का पुनर्गठन (6) गुप्तचर व्यवस्था (7) न्याय व्यवस्था को बताते हुए ~~[illegible]~~ मूल्यांकन करना है।

उत्तर (5) ~~[illegible]~~ अलाउद्दीन खिलजी ने यद्यपि सुसंगठित और शक्तिशाली राज्य स्थापित किया था, किन्तु उसकी मृत्यु के चार वर्ष बाद ही खिलजी वंश का पतन हो गया था। इसके प्रमुख कारण इस प्रकार थे—
(i) सैनिक राज्य (ii) रक्त और युद्ध की नीति (iii) हिन्दुओं के प्रति कठोर नीति, (iv) अमीरों और सरदारों के प्रति कठोर नीति (v) शक्तियों का अत्यधिक केन्द्रीयकरण (vi) मंडियों के कठोर नियम (vii) शहजादों को समुचित शिक्षा न मिलना (viii) काफूर का षडयंत्र, ~~(ix)~~ खिलजी क्रांति, एवं उसके महत्व को विस्तार से बताते हुए तुगलक वंश की स्थापना को बताना है।

उत्तर (6) - बलबन के पश्चात अमीरों और उलेमा के प्रभाव, उनकी राजनीति में हस्तक्षेप और षड्यंत्र ने सुल्तान की प्रतिष्ठा बिल्कुल ही नष्ट कर दी थी। अत: अलाउद्दीन के सामने सबसे बड़ी समस्या सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा, महिमा और गौरव को फिर से स्थापित करना था। यह इसलिए भी आवश्यक था क्योंकि राज्य को हड़पने की वजह से नए सुल्तान की प्रतिष्ठा भी नष्ट हो चुकी थी। अत: उसने अमीर खुसरो की मदद से अपना राजत्व संबंधी सिद्धांत निर्धारित किया। अलाउद्दीन ने मानवीय प्रवृत्तियों और दैवी शक्तियों पर आधारित राजत्व की कल्पना नहीं की (1) बल्कि उसका विश्वास ऐसे राजत्व में था जो स्वयं अपने अस्तित्व द्वारा अपना औचित्य सिद्ध कर सके (2) वह जनता के स्नेह और समर्थन की आकांक्षा करता था (3) इसलिए उसने राज्य को धर्मनिरपेक्ष बनाने का प्रयास किया एवं जनकल्याण के कार्य किये (4) खलीफा का महत्व स्वीकार किया। (5) उलेमा वर्ग का आधिपत्य समाप्त किया। (6) उसने नवीन धर्म की योजना भी बनाई लेकिन कोतवाल के परामर्श पर कि इससे जनता के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने से सुल्तान के प्रति उनकी श्रद्धा कम हो जाएगी।

इसके अलावा हिन्दुओं के प्रति सुल्तान की नीति एवं सुल्तान की शक्तियों में वृद्धि एवं आंतरिक विद्रोहों को दबाना एवं अलाउद्दीन के चार अध्यादेश भी अलाउद्दीन के राजत्व सिद्धांत से प्रभावित थे, बताता है।

उत्तर (7) अमीर खुसरो मध्यकालीन ऐतिहासिक लेखकों में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। खुसरो को छः सुल्तानों के अंतर्गत सेवा करने का अवसर मिला था। अमीर खुसरो ने बलबन से लेकर मुहम्मद तुगलक के काल तक की घटनाओं का आंखों देखा वर्णन किया है। उसने राज्य में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया और अनेक युद्धों में अपनी सैनिक प्रतिभा को भी प्रदर्शित किया। उसके ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व के हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं—

(i) किरानुस्सादेन, (ii) मिफताउल फुतूह (iii) आशिका (iv) नूह सिपेहर
(v) खजाइनुल फुतूह या तारीख ए अलाई (vi) तुगलकनामा इन ग्रंथों में किया गया वर्णन की व्याख्या करनी है। इसके अलावा—

जियाउद्दीन बरनी भी मध्यकालीन भारत की सूचना के प्रमुख स्रोत माने जाते हैं। बरनी तुगलककालीन भारत का मुख्य इतिहासकार है। उसके प्रमुख ग्रंथ हैं तारीख ए फिरोजशाही, फतवा ए जहांदारी, इन ग्रंथों में किए गए वर्णन की व्याख्या करनी है। बरनी की ये दोनों कृतियां अमूल्य हैं और उनकी समानता अन्य किसी समकालीन लेखन में नहीं मिलती।

उत्तर-(8) 1210-1246 तक इल्बरी तुर्क सुल्तानों ने शासन किया। इसमें प्रमुख थे इल्तुतमिश एवं रजिया। इल्तुतमिश को ~~सल्तनत की~~ गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इल्तुतमिश द्वारा प्रतिद्वंदियों का दमन किया गया, मंगोलों से संबंध, सैनिक अभियान, खलीफा से स्वीकृति पत्र, चरगान की स्थापना से सुल्तान की शक्ति में वृद्धि, इक्तादारी व्यवस्था की स्थापना, सैन्य एवं न्यायिक सुधार, मुद्रा में सुधार बताते हुए, कार्यों की समीक्षा करनी है।, फिरोजशाह 1236 में सुल्तान बना फिर रजिया सुल्तान ने 1236-40 तक शासन किया, मुईजुद्दीन बहरामशाह 1240-1242, अलाउद्दीन मसूदशाह 1242-46, तक सुल्तान रहे। यद्यपि इल्तुतमिश एवं रजिया प्रमुख सुल्तान रहे और इन्होंने ही सल्तनत को मजबूती देने का प्रयास किया अन्य सुल्तान कमजोर साबित हुए। इन सभी के शासन की व्याख्या करनी है।

[signature]

(Dr. Seema Pandey)